VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(25 February 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुवाहाटी में 'अब तक के सबसे बड़े' 'झुमुर' कार्यक्रम में भाग लिया
- तिब्बत के माध्यम से भारत को चीन से जोड़ने वाला ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड'
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के सबसे बड़े 'झुमुर या झुमॉइर' कार्यक्रम में भाग लिया:

चर्चा में क्यों है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 फरवरी को इतिहास में अब तक के सबसे बड़े झुमुर (जिसे झुमॉइर या झुमैर भी लिखा जाता है) कार्यक्रम देखा। असम के चाय उद्योग की 200वीं वर्षगांठ के अवसर पर झुमॉइर बिनांदिनी 2025 में गुवाहाटी के सरुसजाई स्टेडियम में करीब 8,600 नर्तक प्रस्तुति किया गया।
- इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उनकी सरकार असम की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है, साथ ही उन्होंने बताया कि यह उनकी सरकार के ऐतिहासिक फैसले में झलकता है जिसमें असमिया को एक शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने असम की चाय बागान संस्कृति के साथ अपने गहरे व्यक्तिगत जुड़ाव को भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा, "इस जबरदस्त

तैयारी में चाय के बागानों की खुशबू और सुंदरता है, और एक चायवाले से बेहतर चाय की खुशबू और रंग को कौन जान सकता है?"

असम का चाय बागान समुदाय या "चाय जनजाति" क्या है?

- असम का "चाय जनजाति" शब्द का मतलब चाय बागानों में काम करने वाले श्रमिकों और उनके वंशजों के बहुसांस्कृतिक, बहु-जातीय समुदाय से है। ये लोग मध्य भारत - ज्यादातर वर्तमान झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल- से आए थे - और 19वीं सदी में असम में बस गए थे, ताकि अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित किए जा रहे चाय बागानों में काम कर सकें।
- यह प्रवास अक्सर मजबूरी में होता था, और जब ऐसा नहीं होता था, तब भी यह अत्यधिक शोषणकारी परिस्थितियों में होता था। ये प्रवासी न केवल चाय बागानों में बहुत कम वेतन पर बेहद खराब परिस्थितियों में काम करते थे, बल्कि वे यहां से जाने के लिए भी स्वतंत्र नहीं थे। असम और चाय बागानों की यात्रा के दौरान हज़ारों लोग बीमारियों से मर गए, और सैकड़ों लोग बागानों से भागने की कोशिश करने के लिए ब्रिटिश बागान मालिकों द्वारा मारे गए या क्रूरतापूर्वक दंडित किए गए।

- आज, इन लोगों के वंशज मुख्य रूप से चाय बागानों की बड़ी संख्या वाले जिलों में केंद्रित हैं, जैसे ऊपरी असम में तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, शिवसागर, चराइदेव, गोलाघाट, लखीमपुर, सोनितपुर और उदलगुरी, और बराक घाटी में कछार और करीमगंज।
- वर्तमान में उन्हें राज्य में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) का दर्जा प्राप्त है, हालांकि वे लंबे समय से अनुसूचित जनजाति (एसटी) के दर्जे के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हालांकि असम में बड़े चाय बागान समुदाय का हिस्सा मुंडा या संथाल जैसी जनजातियों को उन राज्यों में एसटी का दर्जा प्राप्त है जहां से वे मूल रूप से आए थे।

असम का झुमुर नृत्य क्या है?

- चाय बागान समुदाय, अपने मूल जगह से असम में सांस्कृतिक प्रथाओं का एक विविध संग्रह लेकर आया। इस संबंध में झुमुर परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
- झुमुर सदान जातीय भाषाई समूह का लोक नृत्य है, जो छोटानागपुर क्षेत्र में अपनी उत्पत्ति का पता लगाते हैं। वर्तमान में यह असम में चाय बागान श्रमिकों द्वारा मनाए जाने वाले "चाय बागान उत्सवों" या त्योहारों में एक केंद्रीय स्थान रखता है। सबसे महत्वपूर्ण हैं तुशु पूजा और करम पूजा, जो आने वाली फसल का जश्न मनाते हैं।

- झुमुर नृत्य में महिलाएं मुख्य नर्तक और गायिकाएँ होती हैं, जबकि पुरुष पारंपरिक वाद्ययंत्र जैसे मादल, ढोल, या ढाक (ड्रम), झांझ, बांसुरी और शहनाई बजाते हैं।
- झुमुर नृत्य में पहनावा समुदाय से समुदाय में भिन्न होता है, हालांकि लाल और सफेद साड़ियां महिलाओं के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। नर्तक कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं और अपनी मूल भाषाओं - नागपुरी, खोरठा और कुरमाली में दोहे गाते हुए सटीक पैरों के साथ समन्वित पैटर्न में चलते हैं।

झुमुर नृत्य का असमिया संस्कृति में योगदान:

- उल्लेखनीय है कि असम में झुमुर नृत्य का विकास असमिया से काफी हद तक उधार लेने के लिए हुआ है। यह परंपरा सामाजिक सामंजस्य के साधन के रूप में भी काम करती है, खासकर चाय बागान समुदायों के विस्थापन के इतिहास को देखते हुए।
- इसने न केवल उनकी संस्कृति और पहचान के पहलुओं को बनाए रखने में मदद की, बल्कि उनके पूर्वजों ने जिस दुनिया में खुद को पाया, उसे समझने में भी मदद की।

साभार: द इंडियन एक्सप्रेस

तिब्बत के माध्यम से भारत को चीन से जोड़ने वाला ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड':

चर्चा में क्यों है?

- भारत में चीन के राजदूत जू फीहोंग ने रविवार 23 फरवरी को एक्स पर ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड' के बारे में पोस्ट किया, जो 2,000 किलोमीटर से अधिक लंबा था और तिब्बत के माध्यम से चीन को भारत से जोड़ता था।
- चीन के राजदूत ने लिखा, "प्राचीन टी-हॉर्स रोड इतिहास की लंबी नदी के दौरान चीन और भारत के बीच आदान-प्रदान और बातचीत का गवाह है"। उल्लेखनीय है कि सिल्क रोड जितना प्रसिद्ध नहीं है, जो चीन और यूरोप को जोड़ता है, टी हॉर्स रोड सदियों से एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक मार्ग था।

ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड' क्या है?

- टी हॉर्स रोड किसी एक मार्ग को नहीं बल्कि कई शाखाओं वाले रास्तों के एक नेटवर्क को संदर्भित करता है जो दक्षिण-पश्चिम चीन में शुरू होता था और भारतीय उपमहाद्वीप में समाप्त होता था

- दो मुख्य मार्ग युन्नान प्रांत के दाली और लिजिआंग जैसे शहरों से होकर गुजरती थी और भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश करने से पहले तिब्बत में ल्हासा पहुँचती थी जहाँ वे वर्तमान भारत, नेपाल और बांग्लादेश में विभाजित हो जाता है। इन मार्गों पर यात्रा करना ख़तरनाक था, ये कठिन इलाकों से गुज़रते थे और 10,000 फीट की ऊँचाई तक पहुँचते थे।
- टी हॉर्स रोड की उत्पत्ति चीन में तांग राजवंश (618-907 ई.) के शासन से जुड़ी हुई है।

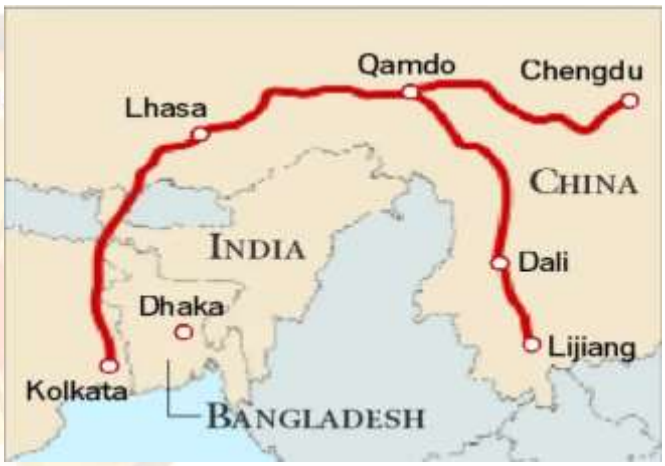

- बौद्ध भिक्षु यिजिंग (635-713 ई.) के लेखन - जिन्होंने आज उपलब्ध नालंदा विश्वविद्यालय के कुछ सबसे विस्तृत विवरण दिए हैं - में चीनी (सुगर), कपड़ा और चावल के नूडल्स जैसे उत्पादों का उल्लेख है जो दक्षिण-पश्चिमी चीन से तिब्बत और भारत में ले जाए जाते थे जबकि घोड़े, चमड़ा, तिब्बती सोना, केसर और अन्य औषधीय जड़ी-बूटियाँ चीन जाती थीं।
- समय के साथ, व्यापार चाय और घोड़ों पर केंद्रित हो गया, जैसा कि सोंग राजवंश (960-1279 ई.) के आधिकारिक दस्तावेजों से पता चलता है। हालाँकि, व्यापारी

अन्य वस्तुओं के व्यापार के लिए भी इस मार्ग का उपयोग करते थे, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे हर बार दक्षिण एशिया के पूरे रास्ते को कवर करते हों।

टी हॉर्स रोड क्यों महत्वपूर्ण था?

- माना जाता है कि इस मार्ग के निर्माण का मुख्य कारण तिब्बती खानाबदोशों के बीच चाय की मांग थी। एक लोकप्रिय किंवदंती कहती है कि चाय तब लोकप्रिय हुई जब 7वीं शताब्दी में एक राजकुमारी ने तिब्बती राजा से विवाह किया और वह इस पेय को दहेज के रूप में पहाड़ी राज्य में लेकर आई।
- नेशनल ज्योग्राफिक लेख के अनुसार "तिब्बती राजघराने और खानाबदोशों ने अच्छे कारणों से चाय को अपनाया। यह ठंडे मौसम में एक गर्म पेय था, जहाँ बर्फ पिघलने पर याक या बकरी का दूध, चांग (जौ की बीयर) ही एकमात्र विकल्प था। याक बटर चाय का एक कप - अपने विशिष्ट नमकीन, थोड़े तैलीय, तीखे स्वाद के साथ खुद को गर्म करने वाले चरवाहों के लिए एक छोटा-सा भोजन प्रदान करता था"। उसी समय, घोड़े एक महत्वपूर्ण सैन्य संसाधन और परिवहन का साधन थे। लेकिन चीन के मध्य मैदानों में घोड़े पैदा नहीं होते थे, जिसका अर्थ है कि उन्हें पड़ोसी तिब्बत और युन्नान से आयात करना पड़ता था।

टी हॉर्स रोड का पतन क्यों हुआ?

- 1912 में, जब किंग राजवंश का समय समाप्त हो गया, तब भी हॉर्स टी रोड का महत्व बना रहा। घरेलू "अशांति और विदेशी आक्रमणों" ने "दक्षिण-पश्चिम चीन में व्यापार प्रणालियों के लिए एक अनूठा अवसर" प्रदान किया।
- इस सड़क के माध्यम से, नई तकनीकें और सामान युनान के कम विकसित पहाड़ी क्षेत्रों में लाए गए। इसके अतिरिक्त, चीन के अब विश्व बाजार के साथ अधिक संपर्क में होने के कारण, युनान के चाय उद्योग का तेजी से विस्तार हुआ।
- बाद में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, इस मार्ग ने चीन में अग्रिम पंक्ति के युद्धक्षेत्र में आपूर्ति परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जब जापान ने लगभग सभी चीनी तटरेखा और हवाई क्षेत्र को नियंत्रित किया।
- 1949 में पीपुल्स रिपब्लिक की स्थापना के साथ, टी हॉर्स रोड में धीरे-धीरे गिरावट देखी गई। सड़कें पक्की की गईं और आधुनिक निर्माण कार्य किए गए, अब केवल कुछ ही रास्ते बचे हैं। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि 150 किलोग्राम तक का भार ढोने वाले कुलियों ने माओत्से तुंग के भूमि सुधारों के बाद ज्यादातर कठिन काम करना बंद कर दिया। हाल ही में, चीन ने इस ऐतिहासिक मार्ग पर पर्यटन को बढ़ावा दिया है। और लिजिआंग 1997 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल बन गया।

साभार: द इंडियन एक्सप्रेस

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

MCQs

1. चर्चा में रहे असम के "चाय जनजाति" के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. यह के चाय बागानों में काम करने वाले श्रमिकों और उनके वंशजों के बहुसांस्कृतिक, बहु-जातीय समुदाय हैं।
   2. वर्तमान में असम में इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्राप्त है।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

   Ans:(a)

2. असम के 'झुमुर नृत्य' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही हैं?

   (a) यह चाय जनजातियों द्वारा अपने मूल स्थानों से लाया गया सांस्कृतिक पहलू है।

   (b) यह सदान जातीय समूह का लोक नृत्य है, जो मूल रूप से छोटानागपुर क्षेत्र के हैं।

   (c) इस नृत्य में पहनावा समुदाय से समुदाय में भिन्न होता है।

   (d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

   Ans:(d)

3. चर्चा में रहे 'झुमुर नृत्य के असमिया संस्कृति में योगदान' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. असम में झुमुर नृत्य का विकास असमिया से काफी हद दूरी बनाने के लिए हुआ है।
2. झुमुर नृत्य ने न केवल चाय जनजातियों की संस्कृति और पहचान के पहलुओं को बनाए रखने में मदद की, बल्कि उनके पूर्वजों ने जिस दुनिया में खुद को पाया, उसे समझने में भी मदद की।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(b)

4. हाल ही में चर्चा में रहा 'टी हॉर्स रोड' निम्नलिखित किन दो देशों के मध्य जुड़ा ऐतिहासिक व्यापार मार्ग था?

(a) तुर्की और ईरान के मध्य

(b) भारत और चीन के मध्य

(c) थाईलैंड और चीन के मध्य

(d) भारत और अफगानिस्तान के मध्य

Ans:(b)

5. चर्चा में रहे ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. यह कई शाखाओं वाले रास्तों के एक नेटवर्क को संदर्भित करता है जो दक्षिण-पश्चिम चीन में शुरू होता था और भारतीय उपमहाद्वीप में समाप्त होता था।

2. इस मार्ग के निर्माण का मुख्य कारण तिब्बती खानाबदोशों के बीच चाय की मांग थी।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(c)